नमाज़ की जमाअ़त का बयान !!
क़ानूने शरीअ़त सफ़्ह: 115 – 122

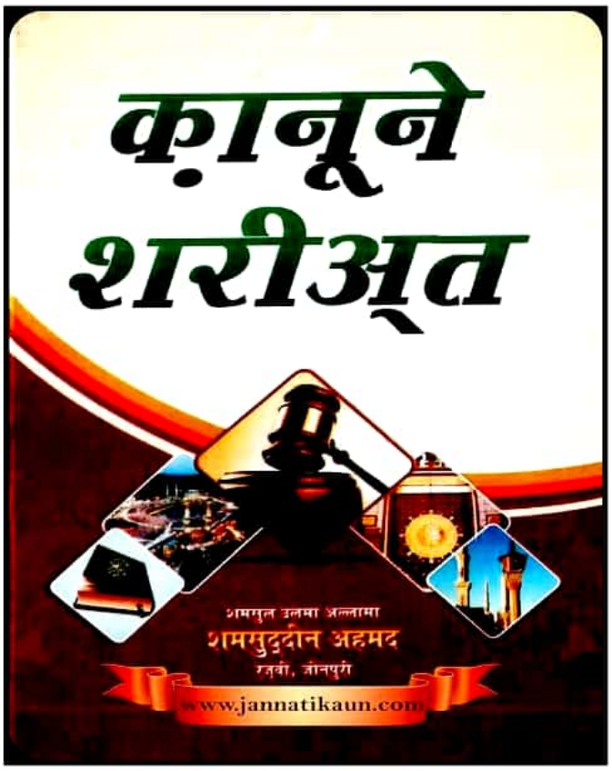

इल्म दीन का सीखना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ है।

✯ क़ानूने शरीयत ✯

(भाग–१)

जिसमें

अक़ाएद, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, .कुर्बानी व अक़ीक़ा के मसाएल बयान किये गये हैं।

लेखक:-

हज़रत मौलाना शमसु द्दीन अहमद जाफ़री रिज़वी जौनपुरी

JANNATI KAUN?

जमात का बयान

जमात की बहुत ताकीद है और इसका सवाब बहुत ज़्यादा है यहां तक कि बे जमात की नमाज़ से जमात वाली नमाज़ का सवाब सत्ताइस गुना है .

मसला — मर्दो को जमात के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनाहगार और सज़ा के लाएक़ है और कई बार तर्क करने वाला तो फ़ासिक़ (मरदूदुश्शहादत) है और उसको सख़्त सज़ा दी जायेगी अगर पड़ोसियों ने सकूत किया तो वह भी गुनाहगार हुए .

मसला — जुमा व ईदैन में जमात शर्त है यानी बेग़ैर जमात यह नमाज़ होगी ही नहीं .

मसला — तरावीह में जमात सुन्नते केफ़ाया है यानी मोहल्ला के कुछ लोगो ने जमात से पढ़ी तो सबके ज़िम्मा से जमात छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमात छोड़ी तो सब ने बुरा किया

मसला — रमज़ान शरीफ़ के वित्र में जमात मुस्तहब है .

मसला — सुन्नतो और नफ़िलो में जमात मकरुह है और रमज़ान के अलावा वित्र में भी मकरुह है .

मसला — अगर जानता है कि आज़ायें वज़ू तीन तीन बार धोने में रकात छूट जायेंगी तो बेहतर यह है कि तीन तीन बार न धोये और रकात न जाने दे और अगर समझता है कि तीन तीन बार धोने में रकात तो मिल जायगी मगर तकबीरे ऊला न पायेंगा तो तीन बार धोयें

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899

Scanned by CamScanner

जमात का बयान

जमात की बहुत ताकीद है और इसका सवाब बहुत ज़्यादा है यहां तक कि बे जमात की नमाज़ से जमात वाली नमाज़ का सवाब सत्ताइस गुना है .

मसला – मर्दो को जमात के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनाहगार और सजा के लाएक़ है औरकई बार तर्क करने वाला तो फ़ासिक़ (मरदूदुश्शहादत) है और उसको सख़्त सजा दी जायेगी अगर मोहल्ले वालो ने सकूत किया तो वह भी गुनाहगार हुए .

मसला – जुमा व ईदैन में जमात शर्त है यानी बेग़ैर जमात यह नमाज़ होगी ही नही .

मसला – तरावीह में जमात सुन्नते केफ़ाया है यानी मोहल्ला के कुछ लोगो ने जमात से पढ़ी तो सबके ज़िम्मा से जमात छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमात छोड़ी तो सब ने बुरा किया

मसला – रमज़ान शरीफ़ के वित्र में जमात मुस्तहब है .

मसला – सुन्नतो और नफ़िलो में जमात मकरुह है और रमज़ान के अलावा वित्र में भी मकरुह है .

मसला – अगर जानता है कि आज़ायें वज़ू तीन तीन बार धोने में रकात छुट जायेगी तो बेहतर यह है कि तीन तीन बार न धोये और रकात न जाने दे और अगर समझता है कि तीन तीन बार धोने में रकात तो मिल जायगी मगर तकबीरे ऊला न पायेंगा तो तीन बार धोयें

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899
Scanned by CamScanner

मसला – मुहल्ला की मस्जिद में जिसके लिये एमाम मोक़र्रर है मुहल्ला के एमाम ने अज़ान व एक़ामत के साथ सुन्नत के मुताबिक़ जमात पढ़ ली है तो अब फ़िर दोबारा अज़ान व एक़ामत के साथ पहले ही की तरह जमात क़ाएम करना मकरुह है और अगर बे अज़ान जमात दोबारा की तोहर्ज नही जबकि मेहराब से हट कर हो और अगर पहली जमात बे अज़ान हुई याआहिस्ता अज़ान हुई या ग़ैरो ने जमात क़ाएम की तो फ़िर जमात क़ाएम की जायें और यह जमात जमातें सानिया न होगी

मसला – जिसकी जमात जाती रही उस परयह वाजिब नही कि दूसरी मस्जिद में जमात तलाश करके पढ़े अ़लबत्ता अगर ऐसा करे तो मुस्तहब है .

इन उ़ज़्रों से जमात छोड़ सकता है . ऐसी बीमारी कि मस्जिद तक जाने मे मशक़्क़त हो . सख़्त बारिश, बहुत कीचड़, सख़्त सर्दी, सख़्त अन्धेरी, आंधी, पाखाना, पेशाब, रेयाह का बहुत ज़ोर होना ज़ालिम का खौफ़, क़ाफ़िला छूट जाने का डर, अन्धा होना, अपाहिज होना, इतना बूढ़ा होना कि मस्जिद तक जाने से मजबूर हो, माल या खाने के हलाक हो जाने का डर, मुफ़लिस को क़र्ज़ख़्वाह का डर, बीमार की देखभाल कि यह अगर छोड़ कर चला जायेगा तो उसको तकलीफ़ होगी या घबरायेगा यह सब जमात छोड़ने के उ़ज़्र हैं .

मसला – औरतों को किसी नमाज़ में जमात की हाज़री जाएज़ नही दिन की नमाज़ हो यारात की जुमा की हो या ईदैन की चाहे जवान हो या बुढ़िया यूंही वाज़ की मजलिस में भी जाना नाजाएज़ है .

मसला – अकेला मुक़तदी मर्द अगरचे लड़का हो एमाम के बराबर दाहिनी तरफ़ खड़ा हो बाईं तरफ़ या पीछे खड़ा होना मकरुह है . दो मुक़तदी हों तो पीछे खड़े हों बराबर खड़ा होना मकरुह तनज़ीही है दो से ज़्यादा हों एमाम के बराबर खड़ा होना मकरुह तहरीमी है .

मसला – एक आदमी एमाम के बराबर खड़ा था फ़िर एक और आया तो एमाम आगे बढ़ जायें और यह आने वाला इस मुक़तदी के बराबर खड़ा हो जायें और अगर एमाम आगे न बढ़े तोयह मुक़तदी पीछे हट आये या ख़ुद हट आयें या आने वाला उसको पीछे खींच ले. लेकिन जब मुक़तदी एक हो तो उसका पीछे आ जाना अफ़्ज़ल है और अगरदो हों तो एमाम का आगे बढ़ जाना अफ़ज़ल

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899
Scanned by CamScanner

मसला – सफ़ सीधी हो और लोग मिल कर खड़े हो बीच में जगह न रहे और सब के मोढ़े बराबर हो और एमाम आगें बीच में हो

मसला – पहली सफ़ में और एमाम के करीब खड़ा होना अफ़ज़ल है लेकिन जनाज़ा में पिछली सफ़ में होना अफ़ज़ल है

मसला – मुक़तदी को तकबीर तहरीमा एमाम के साथ या बाद कहना चाहिये यहां तक कि अगर लफ़्ज़ अल्लाह तो एमाम के साथ कहा और अकबर एमाम से पहलें तो नमाज़ न होगी

मसला – मुक़तदी को किसी नमाज़ में क़रात जाएज़ नही न अलहम्दो न सूरह ख़्वाह एमाम ज़ोर से पढ़े या आहिस्ता एमाम कापढ़ना मुक़तदी के लिये काफ़ी है

मसला – सफ़ों की तरतीब यूं होना चाहिये कि अगली सफ़ो में मर्द हों और उसके बाद लड़के और सबसे पीछे आरतें

मसला – एमाम को **(1)** मुसलामन **(2)** मर्द **(3)** आक़िल **(4)** बालिग़ **(5)** नमाज़ के मसाएल का जानने वाला **(6)** ग़ैर माज़ूर होना चाहियें कि अगर एमाम मे इन छओं बातो में से कोई बात न पाई गई तो उसके पीछे नमाज़ न होगी

मसला – माज़ूर अपने मिस्ल माज़ूर का या अपनेसे ज़ाएद उज़्र वालें का एमाम हो सकता है और अगर एमाम व मुक़तदी दोनो को दो क़िस्म के उज़्र हो मसलन एक को रेयाह का मर्ज़ है और दूसरे को क़तरे का तो एक दूसरे की एमामत नही कर सकता

मसला – तयम्मुम करने वाला बज़ु करने वालो का एमाम हो सकता है.

मसला – मोज़ो पर मसह करनेवाला पैर धोने वालों की एमामत कर सकत है

मसला – खड़ा होकर नमाज़ पढ़नें वाला बैठ कर पढ़ने वालें की एक़तेदा कर सकता है

मसला – वह शख़्स जो रुकु सजूद करता है वह उसके पीछे नही पढ़ सकता जो इशारे से पढ़ता है लेकिन अगर एमाम व मुक़तदी दोनो इशारे से पढ़तें हो

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899

Scanned by CamScanner

तो एक़तेदा जाएज़ है.

मसला – नंगा सतर छु ाने वाले का एमाम नही हो सकता

मसला – बद मज़हब ।जसकी बद मज़हबी हदे कुफ्र को न पहुंची हो जैसे तफ्ज़ीलीया इसको एमाम बनाना गुनाह और उसके पीछे नमाज़ मकरुह तहरीमी वाजिबुल एआदा है .

मसला – फ़ासिक़ मुअलिन जैसे शराबी, जुआरी, ज़ानी, सूद खोर, चुगुलखोर वग़ैरह जो कबीरा गुनाह अलानिया करते हैं उनको एमाम बनान गुनाह और उनके पीछे नमाज़ मकरुह तहरीमी वाजिबुल एआदा है .

मसला – वह बद मज़हब जिसकी बद मज़हबी हदे कुफ्र को पहुंच गई हो जैसे राफ़ज़ी (अगरचे सिर्फ़ अबूबकर सिद्दीक़ रज़े अल्लाहो अन्हू की खेलाफ़त या सहाबियत से इन्कार करता हो या शेखैन रज़े अल्लाहो अन्हुमा की शाने अक़दस में तबर्रा कहता हो) जहमी, मुशब्बहक़दरी और वह जो क़ुरआन को मखलूक़ बताता है और वह जो शफ़ाअत या दीदारे एलाही या अज़ाबे क़ब्र या केरामन कातेबीन का इन्कार करता है उनके पीछे नमाज़ नही हो सकती इससे सख्त तर हुक्म उन लोगों का है जो अपने आप को मुसलमान कहते है बल्कि मुत्तबए सुन्नत बनते है और इसके बावजूद बाज़ ज़रुरियाते दीन को नही मानते अल्लाह व रसूल की तौहीन करते या कम से कम तौहीन करने वालो को मुसलमान जानते है. इनके पीछे भी बिल्कुल नमाज़ जाएज़ नही .

मसला – फ़ासिक़ की एक़तेदा न की जाये मगर सिर्फ़ जुमा में कि इसमें मजबूरी है बाक़ी नमाज़ो में दूसरी मस्जिद में चला जाये और जुमा अगर शहर में चन्द जगह होता हो तो इसमें भी एक़तेदा न की जायें दूसरी मस्जिद में जाकर पढ़े .

मसला – एमाम का तन्हा ऊंची जगह खडा होना मकरुह है अगर बुलन्दी थोडी हो तो मकरुह तन्ज़ीही और अगर बुलन्दी ज़्यादा हो तो मकरुह तहरीमी

मसला – एमाम नीचे हो और मुक़तदी ऊंची जगह पर यह भी मकरुह और ख़ेलाफ़े सुन्नत है .

मसला – मसबूक़ अपनी छूटी हुई रकातो के अदा करने में मुन्फ़रिद है

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899

Scanned by CamScanner

मसबूक़ वह है जो जमात में उस वक़्त शामिल हुआ जबकि कुछ रकातें एमाम पढ़ चुका था और आख़िर तक एमाम के साथ रहा . मुन्फ़रिद के मानी अकेला पढ़ने वाला जो जमात के साथ न पढ़े.

मसला – मसबूक़ ने एमाम को क़ादे में पाया तो इस तरह शामिल हो कि पहले नीयत करके खड़ा हो और सीधे खड़े रहने की हालत में तकबीरे तहरीमा कहे तकबीरे तहरीमा कह कर फ़िर दूसरी तकबीर कहता हुआ क़ादे में जायें अगर रुकू या सजदा में पायें तब भी यूंही करे अगर पहली तकबीर कहने में रुकू की हद तक झुक गया तो नमाज़ न होगी .

मसला – मसबूक़ चार रकात वाली नमाज़ में चौथी रकात में जमात में शामिल हुआ तो एमाम के सलाम फेरने के बाद खड़ा हो जाये . और एक रकात अलहम्द और सूरत के साथ पढ़े क़ादा करे और फ़िर खड़ा हो जाये और उसमें भी अलहम्दो और सूरत पढ़े और इस रकात पर क़ादा न करे बल्कि एक रकात और पढ़े सिर्फ़ अलहम्दो के साथ और

इस आख़िरी रकात पर क़ादा वग़ैरह करके नमाज ख़त्म करे यानी अ़लावह एमाम के साथ वाले क़ादा के उसको दो क़ादे और करने होंगे एक क़ादा एक रकात के बाद और दूसरा क़ादा इस क़ादा के बाद दो रकात और पढ़ कर .

मसला – मसबूक़ मग़रिब की तीसरी रकात में शरीक हुआ तो एमाम के सलाम फेरने के बाद खड़ा हो जाये. अलहम्दो व सूरे के साथ एक रकात पढ़कर क़ादा करके फ़िर खड़ा हो जायें और अलहम्दो और सूरे पढ़ कर रकात पूरी करे और क़ादा अखीरह करके नमाज़ ख़त्म करे यानी अपनी दोनो रकातों में दो रकात पर क़ादा करे और दोनों रकातों में अलहम्दो और सूरे पढ़े इसमें भी दो क़ादे हुए अलावा एमाम के क़ादे के .

मसला – चार रकात वाली नमाज़ की तीसरी रकात में शामिल हुआ तो एमाम के बाद दो रकात और पढ़े और इन दोनों में अलहम्दो और सूरे ज़रुर पढ़े.

मसला – पहली रकात छूट गई तो एमाम के बाद एक रेकात पढ़े, अलहम्दो और सूरत के साथ .

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899
Scanned by CamScanner

मसला–मसबूक़ ने भूल कर एमाम के साथ सलाम फेर दिया तो नमाज़ न गई पूरी करे अगर बिल्कुल साथ फेरा है तो सजदह सहू भी नहीं और अगर एमाम के ज़रा बाद फेरा तो सजदह सहू वाजिब है। और अगर कसदन सलाम फेरा यह समझ कर कि मुझे भी एमाम के साथ सलाम फेरना चाहिये तो नमाज़ जाती रही फिर से पढ़े।

मसला–किसी ने चार रकात वाली फ़र्ज़ नमाज़ अकेले शुरू की और अभी पहली रकात का सजदह न करने पाया था कि वहीं जमात शुरु हुई तो अपनी नमाज़ तोड़ कर जमात में शरीक हो जाये और फज्र और मग़रीब में तो अगर पहली रकात का सजदह भी कर लिया हो तो भी तोड़ कर शरीके जमात हो जाये।

मसला–चार रकात वाली नमाज़ में अगर रकात का सजदह कर लिया तो न तोड़ बल्कि एक रकात और पढ़ कर दो पर क़ादा करके सलाम फेर के जमात में शामिल हो जाये।

मसला–अगर तीन रकातें पूरी पढ़ली और जमात क़ाएम हुई तो जमात में शामिल नहीं हो सकता अपनी ही चारों पूरी करे और बाद में नफ़िल की नीयत से जमात में शरीक हो जाये मगर अस्र में शामिल नहीं हो सकता इस लिये कि अस्र के बाद नफिल जाएज़ नहीं।

मसला–चार रकात वाली नमाज में तीसरी रकात का अभी सजदह न किया था कि जमात शुरु हुई तो नमाज़ तोड़ दे और जमात में शरीक हो जाये।

मसला–नमाज़ तोड़ने के लिये बैठने की ज़रुरत नही खड़े खड़े तोड़ने की नीयत से एक तरफ़ सलाम फेर दे।-

मसला–नफ़िल या सुन्नत या कज़ा शुरु की और जमात क़ाएम हुई तो नमाज़न्तोड़े पूरी करके शामिल हो अलबत्ता अगर नफिल चार रकात की

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899

Scanned by CamScanner

नीयत से शुरु की तो दो रकात पर तोड़ दे। तीसरी और चौथी रकात में हो तो पूरी करे।

मसला–जमात में मिलने के लिये नमाज़ तोड़ने का हुक्म उस वक्त है जबकि जमात उस जगह काएम हो जहाँ यह पढ़ रहा है। अगर यह घर में पढ़ रहा है और मस्जिद में जमात काएम हुई तो तोड़ने का हुक्म नहीं या यह एक मस्जिद में पढ़ रहा है और जमात दूसरी मस्जिद मे शुरु हुई तो नहीं तोड सकता अगरचे अभी पहली रकात का सजदह न किया हो तब भी नहीं तोड़ सकता

मसला–क़ेयाम व रुकू व सजूद व क़ादा**अखी**रहमें तरतीब फ़र्ज़ है अगर क़ेयाम से पहले रुकू कर लिया फिर क़ेयाम किया तो वह रुकू जाता रहा अगर बाद क़ेयाम फिर रुकू करेगा तो नमाज़ हो जायेगी वरना नहीं। यूंही रुकू से पहले सजदह करने के बाद अगर रुकू फिर सजदह कर लिया तो हो जायेगी वरना नहीं।

मसला–जो चीज़ें फ़र्ज़ हैं उनमें एमाम की पैरवी मुक़्तदी पर फ़र्ज़ है यानी अगर फ़र्ज़ चीज़ों में से कोई चीज़ एमाम से पहले अदा किया और एमाम के साथ या एमाम के अदा करने के बाद अदा न किया तो नमाज़ न होगी जैसे एमाम से पहले सजदह कर लिया और एमाम अभी सजदह में न आया था कि उसने सर उठा लिया तो अगर एमाम से साथ या बाद को अदा कर लिया तो नमाज़ हो गई वरना नहीं।

मसला–मुक्तदी नेएमाम से पहले सजदह किया मगर उसके सर उठाने से पहले एमाम भी सजदह में पहूँच गया तो सजदह हो गया मगर मुक़्तदी को ऐसा करना हराम है।

मसला–मुक्तदी को सफ़ के पीछे तन्हा खड़ा होना मकरुह तन्ज़ीही है जबकि सफ़ में जगह मौजूद हो और अगर सफ़ में जगह न हो तो हर्ज नही और अगर किसी को सफ़ मे से खीच ले और उसके साथ खड़ा हो तो यह अच्छा है मगर यह ख़्याल रहे कि जिसको खीचे वह इस मसले को जानता हो

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899
Scanned by CamScanner

कहीं उसके खींचने से अपनी नमाज़ न तोड़ दे और चाहिये यह कि यह किसी को इशारा करे और उसे यह चाहिये कि पीछे न हटे इसपर से कराहत दूर हो जायेगी।

जमात क़ाएम करने का तरीक़ा

जमात इस तरह क़ाएम की जाये कि नमाज़ का जब मुस्तहब वक़्त शुरु हो जाये तो अज़ान कही जाये इसके बाद सब लोग बा वज़ू मस्जिद मे या जहाँ जमात करनी हो जमा हों और सुन्नत घर से पढ़ कर न आये हों तो इससे फारिग होकर सफ़ ब सफ़ बैठ जायें और एमाम अपनीजगह पर बैठ जाये अब मोअज्जिन तकबीर कहे जब हइया अलल फलाह पर पहूंचे तब एमाम और मुक़तदी सब लोग खड़े हो जायें। एमाम नमाज़ और एमामत की नीयत करके पढना शुरु कर दे और मुक़तदी भी रुकू करे और एमाम के साथ साथ पूरी नमाज़ स़त्म करें अलहम्दो और सूरत के सिवा सब कुछ जो नमाज़ों में पढा जाता है पढ़ें अगर कोई शख़्स एमाम के शुरु कर देने या कुछ रकातों के पढ़ लेने के बाद आया तो वह भी इस नमाज़ और इस एमाम के पीछे पढने की नीयत से शरीक हो जाये। आखीर में जब एमाम सलाम फेरे सब सलाम फेरें लेकिन जिसकी नमाज़ कुछ छूट गई है वह सलाम न फेरे बल्कि खडा हो जाये और अपनी छूटी हुई रकातों को पूरी करके सलाम फेरे सलाम के बाद एमाम अपने दाहिने या बायें या मुक़तदियों की तरफ़ घूम जाये और दोनों हाथ सीने के सामने फैलाकर दुआ मांगे और मुक़तदी भी दुआ मागें दुआ के बाद अपनी अपनी जगह से हट कर सुन्नत नमाज़ें पढ़ें।

मसला–एमाम तकबीरे तहरीमा क़दक़ामतिस्सलात से ज़रा पहले कहे और मुक़तदी एमाम के तकबीर कहने के बाद तकबीरें कहें।

مُحَمَّد جَمَالُ الدِّين خَان قَادِرِی رَضَوِی
ضِلَع بَہرَائِچ شَرِيف يُو. پِی. اَلہِند
Contact To Telegram : @TTSRB
My Mobile No. +917860520899
Scanned by CamScanner